जनवरी 2024 वर्ष 3, अंक 1

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

"गहरी कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ, डी.ई.आई. न्यूज़लेटर का यह अंक अत्यंत विनम्रतापूर्वक संस्थान के वैभवपूर्ण संस्थापक दयालु हुजूर डा. एम.बी. लाल साहब को समर्पित है। हमारे सिर झुके हुए हैं और हमारे हाथ जुड़े हुए हैं, क्योंकि हम अपने सभी महान उपक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उनकी निरंतर कृपा और आशीर्वाद के प्रार्थी हैं।"

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 8

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 12

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन डी एस सी – ए टी डी आई 2024 का आयोजन 3
2. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ लोहड़ी का आयोजन........ 4
3. डी.ई.आई में क्षमता निर्माण के सांख्यिकीय विश्लेषण पर अल्प–कालीन कार्यक्रम का आयोजन........ 4
संकाय समाचार........ 5
4. कला संकाय........ 5
छात्रोप्लब्धि........ 5
5. शिक्षा संकाय........ 5
शिक्षक प्रशिक्षुओं ने स्काउट और गाइड के रूप में शपथ ली........ 5
प्राथमिक स्तर पर योग्यता आधारित शिक्षण एवं अधिगम पर कार्यशाला का आयोजन........ 6
6. अभियांत्रिकी संकाय........ 6
छात्रोप्लब्धियाँ........ 6
राष्ट्रीय स्तर के Hackathon में प्रतिभागिता........ 6
7. विज्ञान विभाग........ 7
शिक्षक एवं छात्रोप्लब्धियाँ........ 7
8. प्रेम विद्यालय इंटरमीडिएट स्कूल........ 7
स्कूल समाचार........ 7
ओलंपियाड........ 7

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

9. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से........ 8
10. सूचना केंद्रों से समाचार........ 9
शिक्षा दिवस समारोह: विभिन्न केंद्रों से रिपोर्ट........ 9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

11. संपादक की डेस्क से........ 12
12. हंप्स बियॉन्ड द ड्यून्स........ 12
प्रणय भटनागर........ 12
13. दयालबाग़ गौशाला में नया आगमन........ 13
प्रिया सिंह........ 13
14. एक नई भूमि मेरा आश्रय बन गई........ 14
गुरप्यारी भटनागर........ 14
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 14

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. समाचार

द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन डी एस सी – ए टी डी आई 2024 का आयोजन

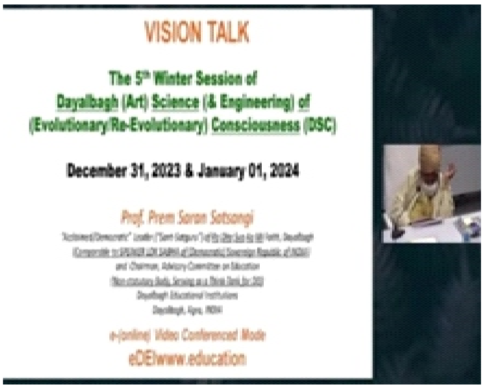

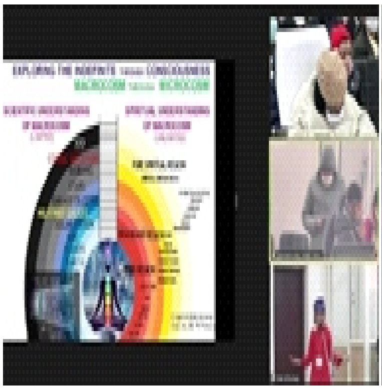

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, दयालबाग़, आगरा–282005, यू.पी. और ए टी डी आई (एसोसिएशन फॉर ट्रांसपोर्ट डेवलपमेंट इन इंडिया) ने छह अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के सहयोग से 31 दिसंबर 2023 को दयालबाग़ साइंस ऑफ कॉन्शसनेस (डी एस सी) 2024 के पांचवें शीतकालीन सत्र का आयोजन किया। 1 जनवरी, 2024 को ट्रिनिटी मोड (ऊपरी, मध्य और निचले) में 'शिक्षा दिवस' और 'दयालबाग़ साइंस ऑफ "कॉन्शसनेस, कॉन्शेन्स एंड अवेयरनेस" डे' एक उत्सव के रूप में मनाया गया।

सम्मेलन का पहला सत्र रविवार, 31 दिसंबर, 2023 को शुरू हुआ, जिसमें रा धा स्व आ मी सतसंग सभा (आर एस एस), दयालबाग़, आगरा–282005, भारत के तत्वावधान में विभिन्न क्षेत्रीय सतसंग संघों ने उनके द्वारा किये गए प्रतिवेशियों के जीवन को 'बेहतर दुनियादारी' की ओर बदलने में प्रभाव के उपक्रम पर प्रकाश डाला। दिन के सत्र का विषय था 'कॉन्सियेन्शसनेस – ड्रिवेन सेल्फ – रिलायन्ट सोशियो–स्प्रिचुअल मॉडल ऑफ दयालबाग़ इन प्रैक्टिस फॉर 108 इयर्स – इट्स स्केलेबिलिटी ग्लोबल इम्प्लीमेंटेशन, सस्टेनेबिलिटी एंड इम्पैक्ट'। पूरे भारत में स्थित 11 क्षेत्रीय सतसंग संघों और विदेश में स्थित 5 क्षेत्रीय सतसंग संघों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं, जो न केवल स्वयं एक पूर्ण जीवन जीने के लिए बल्कि उनके आसपास के समुदायों के लिए एक शानदार और व्यावहारिक उदाहरण स्थापित करने के लिए उनकी 50 से अधिक आवासीय कॉलोनियों में परियोजनाओं और गतिविधियों की विविधता को दर्शाती हैं। इसके बाद विभिन्न क्षेत्रों के बालकों द्वारा जीवंत और विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

दूसरे दिन, 01 जनवरी, 2024 को एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जो 'कम्युनिटी कॉन्सियेन्शसनेस फॉर लेटरल एंड लॉंगिट्युडिनल मोबिलिटी (ट्रांसपोर्टेशन) फॉर द रियलाईज़ेशन ऑफ अल्टीमेट कॉन्शसनेस' विषय पर केंद्रित थी। पैनल चर्चा अधिकांश लोगों के समक्ष श्रद्धेय प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय) द्वारा 'विज़न टॉक' के साथ शुरू हुई।

दुनिया भर में विविध पृष्ठभूमियों के तीस सम्मानित पैनलिस्टों ने समुदायों के भीतर शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक गतिशीलता को बढ़ावा देने, सामूहिक ज्ञानोदय और मानव अस्तित्व की गहरी समझ में परिणत होने पर अंतर्दृष्टि साझा की। चर्चाओं में सचेतनता, नैतिक आचरण की उत्पत्ति और विभिन्न आयामों में आवाजाही को सुविधाजनक बनाने पर जोर दिया गया, जिससे उच्च स्तर की चेतना और ईश्वर के साथ गहरे संबंध की दिशा में प्रगति संभव हो सके। परिवहन प्रणालियों, स्थायी जीवन शैली प्रथाओं, तकनीकी प्रगति, क्वांटम विज्ञान और समग्र विकासात्मक ढांचे के भीतर चेतना को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करना उल्लेखनीय था। चर्चाओं में वैश्विक प्रगति और सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व के लक्ष्य के साथ विभिन्न डोमेन में पार्श्व और अनुदैर्ध्य एकीकरण सुनिश्चित करने के लिए सचेत प्रणालीगत योजना की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। अंततः, पैनल चर्चा का ध्यान एक कुशल गुरु द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक मार्गदर्शन के अपरिहार्य महत्व को समझने पर केंद्रित था।

प्रवचन में ऐसे आध्यात्मिक रूप से निपुण गुरु की सर्वोत्कृष्ट भूमिका और स्थिति पर गहराई से प्रकाश डाला गया, जो भौतिक से आध्यात्मिक क्षेत्र तक की यात्रा को सुविधाजनक बनाते हैं, परम सम्मानित अध्यक्ष, ACE द्वारा सभी प्रतिभागियों को दिए गए गहन मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के साथ सत्र समाप्त हुआ।

दो दिवसीय सम्मेलन का समापन छात्रों के पोस्टर सत्र और संत (सु)परह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों द्वारा एक जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसमें संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2024 को कैमलिड्स के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में घोषित करने के लिए एक 'कैमल साँग' प्रस्तुत किया गया, और दूसरा, 'लीड काइंडली लाइट', जो सेंट जॉन हेनरी न्यूमैन के 1883 की रचना पर आधारित है।

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ लोहड़ी का आयोजन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने 13 जनवरी, 2024 को लोहड़ी समारोह के माध्यम से अपना सामाजिक–सांस्कृतिक दिवस मनाया। कैमल प्वाइंट के सुंदर स्थल पर आयोजित, यह कार्यक्रम परंपरा, संस्कृति और युवा ऊर्जा का संगम था, जो उमंग व उत्साह की लहर से चिह्नित था। संपूर्ण परिसर अपनी शैक्षिक यात्रा के शुरुआती चरणों से लेकर आकर्षक पोशाक पहने छात्रों ने – संत (सु)परह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के छात्रों ने प्रदर्शन के बहुरूपदर्शक में भाग लिया। द्वितीय चरण के बच्चों संत (सु)परह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों द्वारा पारंपरिक लोहड़ी थीम पर नृत्य, 'हे सुंदरमुंदरिये और सतगुरु लोहड़ी दे', एक रंगारंग प्रदर्शन था। डी.ई.आई रा धा स्व आ मी सरन आश्रम नगर स्कूल ने अभिनय गीत के माध्यम से अपनी सुंदर कहानी से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रेम विद्यालय प्राइमरी स्कूल, दयालबाग़ की विभिन्न कॉलोनियों और स्कूल ऑफ आर्ट एंड कल्चर के छात्रों द्वारा समूह नृत्य ने उच्च ऊर्जा और जीवंत प्रस्तुतियों को प्रदर्शित करते हुए सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने अपने जीवंत प्रदर्शन से शीतकालीन माहौल में गर्माहट और उत्साह का प्रसार किया। डी.ई.आई. के छात्रों की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने उनके भक्तिपूर्ण विषयों से आध्यात्मिकता को छू लिया।

सर्द मौसम के बीच हवा, सर्दियों के व्यंजनों जैसे पॉपकॉर्न, मूंगफली और रेवड़ी की जायकेदार देशी सुगंध से भर गई थी, जिसे उपस्थित लोगों के बीच उदारतापूर्वक साझा किया गया था। इस पारंपरिक उत्सव ने इस अवसर पर उत्सव की यादें और एकजुटता जोड़ दी। कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन एक सहयोगात्मक प्रयास था जिसने समुदाय के साथ संस्थान की एकता को उजागर किया और सभी पर एक यादगार छाप छोड़ी।

डी.ई.आई में क्षमता निर्माण के सांख्यिकीय विश्लेषण पर अल्प–कालीन कार्यक्रम का आयोजन

डी.ई.आई. में 28 नवंबर, 2023 से 5 दिसंबर, 2023 तक सिद्धांत एवं व्यवहार (अनुसंधान में एस पी एस और आर सॉफ्टवेयर के अनुप्रयोग) एसोशिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज़ ने दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 और अकादमिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र (ए आई यू–डी.ई.आई.–ए एडी सी) के साथ मिलकर सांख्यिकीय विश्लेषण पर एक अल्पकालिक क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की संयोजक प्रो पूर्णिमा जैन ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यक्रम का परिचय दिया। डॉ. वी.एम. कटोच, पूर्व महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एन ए एस आई) के अध्यक्ष, डॉ. अमरेंद्र पाणि, संयुक्त निदेशक और प्रमुख, अनुसंधान प्रभाग, भारतीय विश्वविद्यालय संघ, प्रो. सी. पटवर्धन, कार्यवाहक निदेशक, डी.ई.आई. और प्रो. आनंद मोहन, कुलसचिव, डी.ई.आई. ने उद्घाटन समारोह को गौरवान्वित किया।

डी.ई.आई. के विशेषज्ञों के अतिरिक्त डॉ. विनीता सिंह, प्रोफेसर, सांख्यिकी विभाग, सामाजिक विज्ञान संस्थान और निदेशक, ललित कला संस्थान, डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, प्रोफेसर दिवाकर खरे, पूर्व निदेशक, सांख्यिकी विभाग, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़, डॉ. बी.आर. अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा, डॉ. मनोज कुमार, पोस्ट–डॉक्टोरल एसोसिएट (डेटा साइंस,

बायोस्टैटिस्टिक्स, हेल्थ इकोनॉमिक्स), मैकगोवन इंस्टीट्यूट फॉर रीजनरेटिव मेडिसिन यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग, पिट्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया, यू.एस.ए. ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की समग्र पाठ्यक्रम सामग्री को प्रत्येक दिन दो सत्रों के साथ 16 मॉड्यूल में विभाजित किया गया था। सैद्धांतिक सत्रों ने डेटा विश्लेषण और अनुसंधान में डेटा के उपयोग के बारे में प्रतिभागियों की ज्ञानवृद्धि की, जबकि व्यावहारिक सत्र प्रतिभागियों के एस पी एस एस (सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज) और आर सॉफ्टवेयर के साथ व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में सहायक रहा। विभिन्न संस्थानों/विश्वविद्यालयों से 54 प्रतिभागियों ने मिश्रित मोड में कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। ए आई यू–डी.ई.आई.–ए एडी सी की नोडल अधिकारी प्रो. ज्योति गोगिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यधिक सराहनीय रहा।

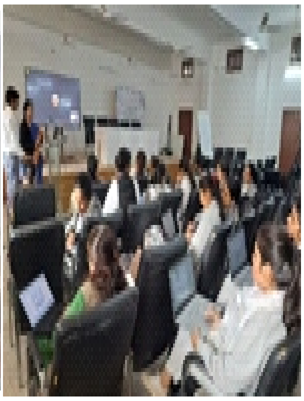

संकाय समाचार

कला संकाय

छात्रोप्लब्धि:

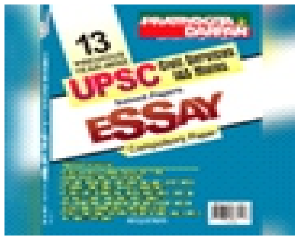

सुश्री दीपाली सेठ, शोधछात्रा, अंग्रेजी विभाग, कला संकाय, डी.ई.आई. ने संघ लोक सेवा आयोग (यू. पी.एस.सी.) परीक्षा के निबंध–लेखन पर अनिवार्य पेपर के संबंध में मार्गदर्शन करने के लिए सिविल सेवा उम्मीदवारों के लिए एक सहायता पुस्तिका लिखी। पुस्तक प्रतियोगिता दर्पण (उपकार प्रकाशन) द्वारा आई एस बी एन नंबर: 978–93–91068–85–1 के साथ प्रकाशित की गई है।

शिक्षक प्रशिक्षुओं ने स्काउट और गाइड के रूप में शपथ ली

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के शिक्षा संकाय ने 14 दिसंबर से 18 दिसंबर, 2023 तक बी.एड., डी.एल.एड और पी एस टी ई (प्री–सर्विस टीचर एजुकेशन) शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए पांच दिवसीय स्काउटिंग और गाइडिंग शिविर का आयोजन किया। नमिता सूद, पूर्व प्रधानाध्यापिका, दिल्ली पब्लिक स्कूल, आगरा उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि थीं।

शिविर के पहले दिन, स्काउट्स और गाइड्स ने पर्यावरण स्वच्छता और नारा–निर्माण प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिसका मूल्यांकन कला संकाय, डी.ई.आई. के दो वरिष्ठ शिक्षकों डॉ. नमस्या और डॉ. निशीथ गौड़ द्वारा किया गया। दूसरे दिन योग प्रशिक्षक श्रीमती संगीता सिन्हा ने विद्यार्थियों को ध्यान अभ्यास कराया। इसके बाद स्काउट्स और गाइड्स द्वारा प्राथमिक चिकित्सा और आत्मरक्षा तकनीकों का प्रदर्शन और एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर के तीसरे दिन, शिक्षा संकाय के एमेरिटस प्रोफेसर डॉ. रणजीत सतसंगी ने टेंट पिचिंग पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। चौथे दिन स्काउट्स और गाइड लंबी पैदल यात्रा के लिए गए, समूहों में तंबू लगाए और आग से भोजन तैयार किया। मूल्यांकन प्रोफेसर एमेरिटस अर्चना कपूर और प्रोफेसर एमेरिटस डी. वसंता (दोनों शिक्षा संकाय से) द्वारा किया गया था। शिविर के दौरान स्काउट्स और गाइड्स ने प्राथमिक चिकित्सा और आत्मरक्षा सहित विभिन्न कौशल सीखे।

समापन सत्र में श्रीमती स्नेह बिजलानी, कोषाध्यक्ष, डी.ई.आई. और प्रोफेसर किरण नाथ, पूर्व संकाय प्रमुख, शिक्षा संकाय, डी.ई.आई. ने स्काउट्स और गाइड्स को शपथ दिलाई। अपने संबोधन में, उन्होंने उपस्थित लोगों से खुद को विश्वसनीय और जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध होने का आग्रह किया, जो साहस और दृढ़ संकल्प के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना

करने के लिए तैयार हों। प्रो. पी.एस. त्यागी और शिक्षा संकाय, डी.ई.आई. की डॉ. आरती सिंह ने शिविर का संचालन किया। शिक्षा संकाय के सभी कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साह और जोश के साथ प्रतिभागिता की।

प्राथमिक स्तर पर योग्यता आधारित शिक्षण एवं अधिगम पर कार्यशाला का आयोजन

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डी आई ई टी), आगरा के सहयोग से स्कूल ऑफ एजुकेशन, डी.ई.आई. द्वारा 4 से 6 जनवरी, 2024 तक प्राथमिक स्तर पर योग्यता–आधारित शिक्षण और अधिगम पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन डी.ई.एल.एड. के लिए किया गया था। डी.ई.आई. विद्यालयों के प्रशिक्षु और सेवारत स्कूल शिक्षक, डायट, आगरा से डॉ. प्रज्ञा शर्मा, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, कागारौल, आगरा, कंपोजिट गर्ल्स स्कूल, एत्मादपुर, आगरा और प्राथमिक विद्यालय, खेड़िया–1 से मास्टर ट्रेनर्स श्री सत्यपाल सिंह, सुश्री प्रियंका गौतम और सुश्री पूजा शर्मा ने कार्यशाला में क्रमशः रिसोर्स पर्सन की भूमिका निभाई। उन्होंने प्रतिभागियों को योग्यता–आधारित पाठ योजनाओं और गतिविधियों के प्रारूप से अवगत कराया। प्रतिभागियों को भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन विषयों में योग्यता–आधारित गतिविधियों के व्यावहारिक अनुभव प्रदान किए गए। प्रतिभागियों को विभिन्न स्कूल रिकॉर्ड और ऑनलाइन और ऑफलाइन मूल्यांकन टूल से भी अवगत कराया गया, जिनका उपयोग वे अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने में कर सकते हैं। कार्यशाला की संयोजक डॉ. पारुल खन्ना एवं सुश्री मुग्धा शर्मा थीं।

अभियांत्रिकी संकाय

छात्रोप्लब्धियाँः

राष्ट्रीय स्तर के Hackathon में प्रतिभागिता

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 की एक टीम को वी एन आर वी जे इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में आयोजित भारत के शिक्षा मंत्रालय की एक पहल, स्मार्ट इंडिया Hackathon (एस आई एच) के ग्रैंड फिनाले 19 एवं 20 दिसंबर, 2023 हैदराबाद के लिए चुना गया। टीम में आतम स्वरूप (टीम लीड), आरत स्वरूप, आरत प्रसाद, गार्गी यादव, वंशिका राजपाल, और प्रियांशु शरण, अभियांत्रिकी संकाय, डी.ई.आई. के सभी छात्र, सुश्री मनीषा गुप्ता और सुश्री मोनिका सिंह, संकाय सदस्य, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, डी.ई.आई. के मार्गदर्शन में थे।

विज्ञान विभाग

शिक्षक एवं छात्रोप्लब्धियाँः

सुश्री राधा यादव और प्रोफेसर शब्दप्रीत ने 'इवैल्यूएशन ऑफ लेमनग्रास नैनोइमल्शन एंड इट्स एलम ब्लेंड फॉर लारविसाइडल एक्टिविटी अगेंस्ट डेंगू वेक्टर Aedes Aegypti' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया और कोशाम्बी फाउंडेशन इंडिया और इतिहास और संस्कृति विभाग, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के संस्कृति भवन में 16 से 18 दिसंबर, 2023 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, आई सी आर पी–2023 में '**युवा वैज्ञानिक पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया। उसी सम्मेलन में, सुश्री बसुधारानी और प्रोफेसर शब्दप्रीत ने 'Molecular Docking Study on Phyto-Constituents of Clove Essential Oil Against Mosquito Juvenile Hormone Binding Protein and Potential Effects on *Aedes Aegypti* Metamorphosis' विषय पर भी शोध पत्र पस्तुत किया और 'सर्वश्रेष्ठ इनोवेशन अवार्ड' प्राप्त किया।

प्रेम विद्यालय इंटरमीडिएट स्कूल

स्कूल समाचारः

एन सी सी प्रशिक्षण शिविरः एन सी सी का सी ए टी सी का 17वां शिविर 12 दिसंबर से 21 दिसंबर, 2023 तक श्री राजेंद्र सिंह कॉलेज, धिमिश्री, आगरा में आयोजित किया गया था। इस शिविर में डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय के 44 कैडेटों ने कैप्टन सुरतप्यारी के कुशल मार्गदर्शन में पूर्ण ऊर्जा, गतिशीलता और जुनून के साथ भाग लिया। आगरा के कई अन्य प्रतिष्ठित कॉलेज जैसे आगरा कॉलेज और आगरा पब्लिक स्कूल आदि भी वहाँ थे। कैडेटों की क्षमता का परीक्षण करने के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिसमें हमारे छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया और कई पुरस्कार जीते, जिनमें रस्साकशी में विजेता रहे, ड्रिल प्रतियोगिता में दूसरा, समूह गीत में पहला, एकल नृत्य में पहला (सुश्री अंजली बघेल बारहवीं–कला) स्थान प्राप्त किया। एकल गीत में प्रथम (सुश्री सात्विकी सरन बारहवीं –वाणिज्य) और सर्वश्रेष्ठ कैडेट पुरस्कार (सुश्री सात्विकी सरन) भी प्राप्त किया।

ओलंपियाडः

नवंबर 2023 में एस ओ एफ इंटरनेशनल इंग्लिश ओलंपियाड द्वारा इंग्लिश ओलंपियाड का आयोजन किया गया था। इस ओलंपियाड में कक्षा VI से XII के 50 छात्रों ने भाग लिया और बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। छठी कक्षा से निरत और ग्यारहवीं कक्षा से तनीषा को प्रतियोगिता के द्वितीय स्तर के लिए चुना गया है। छठी कक्षा से रोशनी, निरत, स्वरूपिका, सातवीं कक्षा से निहार भूषण, ग्यारहवीं कक्षा से अमृत थापर, दामिनी और तनीषा को उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक मिला।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

उच्च शिक्षा में भविष्य के रुझानों के बीच, चर्चा का विषय लाइफलॉन्ग लर्निंग (एल एल एल) है। विकिपीडिया के अनुसार, इसे "व्यक्तिगत, नागरिक, सामाजिक और/या रोजगार–संबंधी परिप्रेक्ष्य में ज्ञान, कौशल और दक्षताओं में सुधार के उद्देश्य से जीवन भर कीजाने वाली सभी सीखने की गतिविधियों" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे अक्सर वह सीखना माना जाता है जो औपचारिक शिक्षा के वर्षों के बाद होता है... और सतत् शिक्षा या वयस्क शिक्षा या प्रशिक्षण की अवधारणा से इस अर्थ में अलग है कि इसका दायरा व्यापक है..., इस प्रकार की शिक्षा मानव क्षमता के विकास से संबंधित है....।

जर्मनी के हैम्बर्ग में स्थित यूनेस्को इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफलॉन्ग लर्निंग द्वारा इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज़ और शंघाई ओपन यूनिवर्सिटी के सहयोग से उच्च शिक्षा संस्थानों (एच ई आई) में आजीवन सीखने पर एक बहुत व्यापक शोध परियोजना आयोजित की गई थी जो 3 वर्षों (2020–22) तक चली, और जिसमें 96 देशों के 399 HEIs ने भाग लिया जिसमें 18 भारत के थे। यह वर्ष 2023 में 'उच्च शिक्षा में आजीवन सीखने के अंतर्राष्ट्रीय रुझान' नामक एक शोध रिपोर्ट लेकर आया है जो भाग लेने वाले HEI में अपनाई जाने वाली प्रथाओं पर आधारित है।

जैसा कि यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर लाइफलॉन्ग लर्निंग के निदेशक ने रिपोर्ट की प्रस्तावना में कहा है: "*तेजी से बढ़ते तकनीकी विकास, जलवायु संकट, लगातार सामाजिक असमानताओं और जनसांख्यिकीय बदलावों के संदर्भ में, लोगों के लिए सीखने पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। " सभी उम्र के लोगों के लिए और शिक्षा प्रणालियों को बदलने के लिए तेजी से अप्रत्याशित श्रम बाजारों के साथ, जीवन भर पुनः कौशल और उन्नयन लोगों के पेशेवर मार्गों का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। डिजिटलीकरण, रोबॉटिक्स और स्वचालन के अलावा, निम्न–कार्बन अर्थव्यवस्थाओं की ओर बदलाव से श्रम बाजारों को नया आकार मिलने की उम्मीद है, जिसके परिणामस्वरूप इस हरित संक्रमण का समर्थन करने के लिए कौशल की मांग बढ़ रही है। ये परिवर्तन जनसंख्या समूहों के बीच असमानताओं को भी गहरा करेंगे, और उन लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे जो पहले से ही नुकसान में हैं।* "

रिपोर्ट के कुछ मुख्य निष्कर्ष नीचे सूचीबद्ध हैं:

- *ऑन–कैंपस सीखना अभी भी सभी डिग्री और गैर–डिग्री कार्यक्रमों के लिए प्रावधान का सबसे सामान्य रूप है, फिर भी छोटे कार्यक्रमों के लिए मिश्रित और दूरस्थ विकल्प पेश किए जाने की अधिक संभावना है, जिनमें शामिल हैं प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और अन्य स्नातकोत्तर पाठयक्रम।*
- *एच ई आई द्वारा एल एल एल गतिविधियों के लिए लक्षित दो सबसे प्राथमिकता वाले समूह कामकाजी लोग हैं जिन्हें अपस्किलिंग/रीस्किलिंग की आवश्यकता है (एच ई आई का 89 %) और सार्वजनिक और निजी संगठनों में काम करने वाले व्यक्ति (84 %)। इसके विपरीत, जल्दी स्कूल छोड़ने वालों, प्रवासियों, शरणार्थियों आदि को केवल 25 प्रतिशत या उससे कम HEI द्वारा लक्षित किया जाता है।*
- *आजीवन शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए, शैक्षिक कार्यक्रमों के अधिक लचीले प्रावधान की आवश्यकता है, जिसमें सीखने के समय, स्थानों और तौर–तरीकों के संदर्भ में लचीलेपन के साथ–साथ सीखने के परिणामों को प्रमाणित करने के लिए छोटे, गैर–डिग्री कार्यक्रमों और वैकल्पिक क्रेडेंशियल्स पर विचार करना शामिल है।*
- *जब प्रवेश और स्थानांतरण मार्गों की बात आती है, तो उच्च शिक्षा क्षेत्र अभी भी प्रतिबंधात्मक प्रतीत होता है, सामान्य माध्यमिक विद्यालय छोड़ने का प्रमाणपत्र अब तक पहुंच का सबसे सामान्य रूप प्रदान करता है। विशेष रूप से, वैकल्पिक पहुंच के लिए कुछ विकल्पों के साथ डिग्री कार्यक्रमों तक पहुंच को अत्यधिक विनियमित किया जाता है, उदाहरण के लिए व्यावसायिक ट्रैक से। आश्चर्य की बात नहीं है कि लघु–चक्र कार्यक्रमों के लिए लचीले विकल्प अधिक उपलब्ध हैं।*

विकिपीडिया में बताया गया है कि आजीवन सीखने के माध्यम से प्राप्त उच्च संज्ञानात्मक भंडार वाले लोग उम्र बढ़ने के अपरिहार्य विनाश को बेहतर ढंग से सहन करने में सक्षम थे और इसलिए संज्ञानात्मक गिरावट से बचते थे।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि HEI अपने ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ODL) और ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करेंगे, बशर्ते कि वे ऐसा करने के लिए मान्यता प्राप्त हों। डीईआई का दूरस्थ एवं ऑनलाइन कार्यक्रम 9–सप्ताह की अवधि के छोटे स्टैंड–अलोन मॉड्यूलर पाठ्यक्रम और प्रमाणपत्र स्तर पर व्यावसायिक कार्यक्रम प्रदान करता है जो जीवन भर सीखने की जरूरतों को पूरा करते हैं।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

सूचना केंद्रों से समाचार

शिक्षा दिवस समारोहः विभिन्न केंद्रों से रिपोर्ट

1 जनवरी, 2024 को **लुधियाना केंद्र** में छात्रों के साथ–साथ शिक्षकों द्वारा भी जबरदस्त उत्साह के साथ शिक्षा दिवस मनाया गया। समारोह की शुरूआत संस्थान प्रार्थना एवं विश्वविद्यालय गीत से हुई। डी.ई.आई. में शिक्षा के महत्व, भूमिका और लक्ष्यों पर चर्चा की गई। 'संपूर्ण मनुष्य के विकास' के मिशन उद्देश्य के साथ डी.ई.आई. के शिक्षा मॉडल के लक्ष्य और उद्देश्यों पर भी चर्चा की गई। अंत में सभी को मिठाई खिलाई गई।

अटलांटा शाखा, यू.एस.ए. ने नए साल की शुरुआत सुबह की प्रार्थनाओं और 5वें दयालबाग़ चेतना विज्ञान (डी एस सी) कार्यक्रम को देखने के साथ की। बाद में, बच्चों और युवाओं ने अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत में शब्द पाठ किया, जिसके बाद ड्रोन की मूल बातों पर एक जानकारीपूर्ण सत्र हुआ। बाद में दिन में, शाखा के सदस्य, फ्लोरिडा, ह्यूस्टन और डलास में संबद्ध केंद्रों के सदस्यों के साथ, 'अनुपम उत्सव' को चिह्नित करने के लिए ऑडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए– कुछ नया सीखकर नए साल का स्वागत करने की दो साल पुरानी पहल। इस कार्यक्रम में डी आर एस ए एन ए के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और दयालबाग़ से श्रीमती संध्या माथुर और प्रो. सरला पॉल सहित लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम एक इंटरैक्टिव सत्र के साथ शुरू हुआ, जिसमें हमारे पूज्य संत सतगुरुओं का मार्गदर्शन शामिल था, जिसका उद्देश्य सभी के लिए एक स्वस्थ और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध जीवन को बढ़ावा देना था। इसके बाद, दयालबाग़ और डी.ई.आई. में 2023 की प्रमुख घटनाओं की समीक्षा प्रस्तुत की गई, जिसमें 'यमुना नदी पुनर्स्थापन परियोजना' और दयालबाग़ गौशाला में ऊंटों की शुरूआत जैसे मील के पत्थर पर प्रकाश डाला गया। वित्तीय साक्षरता को प्रोत्साहित करने वाली एक शिल्प गतिविधि आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों को अपने गुल्लक बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। इसमें दयालबाग़ की 'बाल बचत योजना' पर अटलांटा शाखा सचिव की अंतर्दृष्टि भी शामिल थी। कार्यक्रम के अंतिम खंड में शाखा के लगभग 26 छात्रों ने "नेचर बनाम नर्चर" और "मैक्रो बनाम माइक्रो" विषयों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए। यह चर्चा एक आवर्ती श्रृंखला का हिस्सा थी, जैसा कि परम श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब ने निर्देशित किया था। कार्यक्रम का समापन अटलांटा शाखा सचिव और अन्य अतिथियों की टिप्पणियों के साथ हुआ, जिसमें पिछले वर्ष में सीखे गए सबक, आने वाले वर्ष में सुधार की योजना और अनुग्रह और मार्गदर्शन के लिए हार्दिक प्रार्थना पर ध्यान केंद्रित किया गया।

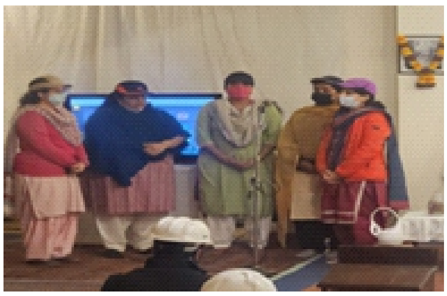

बैंगलोर में, शिक्षा दिवस, 2024 को हाइब्रिड मोड में उत्साहपूर्वक मनाया गया ताकि कई लोग इसमें भाग ले सकें। कार्यक्रम प्रातः ई–सतसंग के बाद निर्धारित था। समारोह की शुरुआत सतसंग शाखा के सदस्यों की एक टीम द्वारा विश्वविद्यालय प्रार्थना प्रस्तुत करने के साथ हुई, जिसके बाद "शिक्षा दिवस पर संक्षिप्त नोट" पढ़ा गया। फिर, सज्जनों और महिलाओं द्वारा पवित्र पुस्तकों से शब्द का पाठ किया गया। इसके बाद, *"दयालबाग़ में शिक्षा पर प्रवचनः संपूर्ण शिक्षा का एक दृष्टिकोण..."* के अंश पढ़े गए।

इसके बाद, केंद्र प्रभारी प्रोफेसर टी.वी.एस.एन. मूर्ति ने अकादमिक पहलू पर भाषण दिया। समारोह का समापन एक अन्य प्रार्थना के पाठ और प्रसाद के वितरण के साथ किया गया।

डी.ई.आई. सूचना केंद्र, सिकंदराबाद ने 1 जनवरी, 2024 को शिक्षा दिवस मनाने के लिए एक वर्चुअल मीट का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. वाईवी महालक्ष्मी, सलाहकार द्वारा संस्कृत में एक स्वागत श्लोक के साथ हुई। उसके बाद, निम्नलिखित व्यक्तियों ने विभिन्न विषयों पर बात की:

डॉ. वाई.वी. सुब्रमण्यम, केंद्र प्रभारी, – 'शिक्षा दिवस का महत्व', श्री राधानंद, शाखा सचिव – 'डी.ई.आई. शिक्षा का अवलोकन', और 'डी.ई.आई. को बढ़ावा देने में सतसंगियों की भूमिका', श्री प्रदीप कुमार माथुर – 'व्यावहारिक ज्ञान के साथ बच्चों को सशक्त बनाना', श्री एन शशिधर– 'अभिनव और व्यापक शिक्षा प्रणाली',

श्रीमती लता अकेला – 'सर साहबजी महाराज द्वारा लिखित भगवद्गीता के एक अध्याय का तेलुगु संस्करण, श्रीमती रितु – 'शिक्षा जीवन भर है', श्री प्रसाद पर्वतम – 'विवेक और सतसंग शिक्षा', श्रीमती वसंत लक्ष्मी – 'डी.ई.आई. शिक्षा प्रणाली – संवर्धन'। बाद में, डॉ. वाई. वी. महालक्ष्मी ने एक संस्कृत श्लोक का पाठ किया। श्रीमती राधारूप ने संस्कृत में श्लोक प्रस्तुत किये। श्रीमती वाणी ने वीणा पर दो *त्यागराज कृतियाँ* बजाईं, सुश्री अवीरा ने संस्कृत में एक प्रार्थना प्रस्तुत की और मास्टर एविन ने अपने ग्रीष्मकालीन स्कूल के अनुभव को साझा किया। अंत में केंद्र प्रभारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा विश्वविद्यालय गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। जूम मीटिंग में कुल पैंतालीस लोग शामिल हुए।

शिक्षा दिवस के अवसर को **जमशेदपुर केंद्र** के छात्रों और शिक्षकों द्वारा उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद इस दिन के महत्व पर केंद्र प्रभारी का संबोधन हुआ। छात्रों ने भाषण, गायन और विचारों के विचारोत्तेजक आदान–प्रदान जैसे कार्यक्रमों में भाग लेकर योगदान दिया। केंद्र के शिक्षकों ने शिक्षा के उद्देश्यों और व्यक्तियों, समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए डी.ई.आई. की भूमिका पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के बाद विश्वविद्यालय गीत और जलपान वितरण के साथ हुआ।

टोरंटो शाखा ने 1 जनवरी, 2024 के शुरुआती घंटों के दौरान खुशी–खुशी शिक्षा दिवस मनाया। उत्सव की थीम का उद्देश्य 'स्थूल जगत एवं सूक्ष्म जगत' और 'प्रकृति और पोषण' की सराहना को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में भाग लेने वालों में टोरंटो शाखा के सदस्यों के साथ–साथ कृषि विज्ञान पाठ्यक्रम के वर्तमान छात्र, कई डी.ई.आई. पूर्व छात्र और चल रहे दूरस्थ कार्यक्रम के छात्र शामिल थे। कुल 34 लोग उपस्थित थे. कार्यक्रम की शुरुआत शाखा के सुपरह्यूमन बच्चों में से एक द्वारा पियानो पर भावपूर्ण गायन के साथ भावपूर्ण प्रार्थना पाठ से हुई। इसके बाद शाखा के चार बच्चों का मनमोहक कविता पाठ हुआ, जिसमें मॉन्ट्रियल एम पी जी के दो प्रतिभाशाली युवाओं की भागीदारी भी शामिल थी। दो अन्य बच्चों ने ऊंटनी के दूध के असंख्य लाभों पर प्रकाश डालते हुए ऊंटनी पर एक संक्षिप्त बातचीत प्रस्तुत की।

इसके बाद, शाखा के एक हाई–स्कूल छात्र ने सूक्ष्म जगत और स्थूल जगत के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए एक व्यावहारिक प्रस्तुति दी। यह प्रस्तुति पश्चिमी और पूर्वी दोनों परंपराओं के प्राचीन दार्शनिकों की व्याख्याओं पर प्रकाश डालती है, जो मानव मन और विशाल ब्रह्मांड के बीच समानताएं दर्शाती है। पेरासेलसस, लीबनिज, प्लेटो जैसी उल्लेखनीय हस्तियों और हिंदू वेदांत दर्शन और उपनिषदों की अंतर्दृष्टि पर वाक्पटुता से चर्चा की गई। कार्यक्रम डी.ई.आई. मासिक समाचार को संबोधित करते हुए एक प्रस्तुति में आगे बढ़ा। 10 बच्चों के लिए ज्ञान पहल के हिस्से के रूप में उत्तरी अमेरिका में जंगल की आग की खतरनाक व्यापकता। व्यापक कवरेज में प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में जंगल की आग के कारणों और लाभों को शामिल किया गया, जिसका समापन एक सार्थक

चर्चा में हुआ जहां बच्चों ने प्रकृति और पोषण के बारे में अपनी नई समझ साझा की। यह उत्सव शाखा के बच्चों और टोरंटो सूचना केंद्र के सदस्यों दोनों के लिए एक असाधारण सीखने का अनुभव साबित हुआ।

गादीरास (सुकमा) केंद्र में, शिक्षा दिवस और दयालबाग़ विज्ञान ''चेतना, विवेक और जागरूकता'' दिवस ट्रिनिटी मोड (ऊपरी, मध्य और निचले) में छात्रों, उनके परिवार के सदस्यों, शिक्षकों, स्थानीय लोगों और केंद्रीय रिजर्व पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से मनाया गया। बल (सी आर पी एफ) के जवान. अतिथियों में श्री अनामी शरण, द्वितीय कमान द्वितीय बटालियन सी आर पी एफ, उनकी पत्नी श्रीमती सावित्री कुमारी, श्री ओम प्रकाश बिश्नोई, सहायक कमांडेंट, 188 बटालियन सी आर पी एफ, श्री राजीव कुमार, सहायक कमांडेंट, 2 बटालियन सी आर पी एफ और उनकी पत्नी, थाना प्रभारी, श्रीमती सितारा पासवान शामिल थी। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत भाषा में प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद देशभक्ति गीत, स्थानीय लोक नृत्य, लघु नाटिका और विश्वविद्यालय गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर, एक प्रदर्शनी–सह–बिक्री का आयोजन किया गया जहां छात्रों ने तकिया कवर, रूमाल, बच्चों के परिधान, ताड़ के पेड़ के पत्तों से बने फूल और झाड़ू जैसे अपने सिले हुए वस्त्र प्रदर्शित किए। एक उत्सव का भी आयोजन किया गया, जिसमें इन छात्रों ने घर का बना स्थानीय नाश्ता और मिठाइयाँ बेचीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम और दावत के बाद मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा एक प्रेरक भाषण दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन केंद्र प्रभारी श्री विजेंद्र कुमार और संकाय सदस्य, श्रीमती भूपिंदर जीत कौर द्वारा दिया गया।

DEI के पूर्व छात्रों और **शिकागो शाखा** के सदस्यों ने 6 जनवरी, 2024 को शिक्षा दिवस मनाया। समारोह की शुरुआत DEI विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद इसके अंग्रेजी संस्करण 'ऑल ग्रेशस एवर मर्सीफुल लॉर्ड' का पाठ किया गया। पूर्व छात्रों ने 'परम गुरु हुज़ूर डॉ एम.बी. लाल साहब' द्वारा गिनाए गए प्रस्तावों और नीतियों पर जोर देते हुए 'डी.ई.आई. शिक्षा नीति' की मुख्य विशेषताएं प्रस्तुत कीं। 'सभी के लिए डी.ई.आई. सतत् विकास लक्ष्य' पर एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया, जहां लोगों, ग्रह, समृद्धि, शांति और साझेदारी पर नीतियों के निहितार्थ पर चर्चा की गई। इसके बाद, ए आई की पढ़ाई कर रहे एक पी एच डी छात्र द्वारा 'द आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रिवॉल्यूशन' पर एक बहुत ही दिलचस्प प्रस्तुति दी गई। अंत में शिकागो अध्ययन केंद्र के भाई–बहनों ने संयुक्त रूप से संगीत वाद्ययंत्रों के साथ शब्द पाठ किया। समारोह का समापन 'तमन्ना यही है' प्रार्थना के साथ हुआ।

1 जनवरी, 2024 को DEI **चेन्नई सूचना केंद्र** में शिक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई। इसके बाद उपस्थित छात्रों, डी.ई.आई. के पूर्व छात्रों, केंद्र संकाय सदस्यों के साथ–साथ बच्चों द्वारा शब्द का पाठ किया गया। विद्यार्थियों ने शिक्षा दिवस के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके बाद डी.ई.आइ. के पूर्व छात्रों के साथ–साथ संत (सु)परह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों और स्कूली छात्रों द्वारा अंग्रेजी और हिंदी में शिक्षा से संबंधित कविता पाठ किया गया। शिक्षा के बारे में राधास्वामी मत के आदरणीय नेताओं के वचनों के अंश कुछ छात्रों और बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए। चेन्नई शाखा के सदस्यों ने व्यक्तिगत और सामुदायिक चेतना को बढ़ाने में शिक्षा के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए और बताया कि कैसे विभिन्न आयु स्तरों पर शिक्षा किसी व्यक्ति के विकास को उसकी पूरी क्षमता का एहसास करने में मदद कर सकती है। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन, विश्वविद्यालय प्रार्थना और मिठाई वितरण के साथ हुआ।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

दयालबाग़ में ऊंटों के झुंड का आगमन और संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2024 को अंतर्राष्ट्रीय कैमलिड्स वर्ष के रूप में घोषित करना एक संयोग से कम नहीं है। संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि पृथ्वी पर सबसे प्रतिकूल पारिस्थितिक तंत्र में रहने वाले कई लोगों के लिए ऊंटनी आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। संस्कृति, अर्थव्यवस्था, पोषण और खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा, स्वदेशी लोगों और स्थानीय समुदायों के जीवन में सकारात्मक योगदान देने के अलावा, वे लचीलापन, कड़ी मेहनत, धैर्य, और हास्य के लिए भी खड़े हैं। हालाँकि, यहाँ दयालबाग में ईश्वरीय कृपा और दया की एक अजीब कहानी सामने आई। अपने राजसी रूप, रंगीन पोशाक, सुंदर चाल और प्रत्येक के व्यक्तिगत नाम के साथ, ये राजसी जीव आसानी से और बहुत ही कम समय में समुदाय का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। घायल ऊंटों में से एक को परमपिता की दयालु दृष्टि से चमत्कारिक ढंग से अच्छे स्वास्थ्य में बहाल किए जाने के साथ, पूरा झुंड उत्साह और आशा का संदेश और विश्वास में इतना शक्तिशाली सबक लेकर आता है कि यह पहाड़ों को भी हिला सकता है।

Do share your comments and contributions at aadeisnewsletter@gmail.com। आपकी प्रतिक्रिया की अत्यधिक सराहना की जाएगी!

हंप्स बियॉन्ड द ड्यून्स

प्रणय भटनागर

एम.एस.सी Zoology (बैच 2022); बी.एस.सी Zoology, (बैच 2020), डी.ई.आई.

वर्तमान में, प्रोजेक्ट एसोसिएट, रेंज–वाइड रिवर डॉल्फिन एस्टीमेशन प्रॉजेक्ट, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून

डी.ई.आई. में अपने स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के दौरान, मुझे दुर्लभ जीवों का सामना करने का सौभाग्य मिला, प्रत्येक दृश्य में बदलाव और सबसे आनंददायक अनुभव आया। और अब एक पारिस्थितिकी विज्ञानी के रूप में, हाल ही में दयालबाग़ में ऊंटों के आगमन ने एक बार फिर मेरी जिज्ञासा जगा दी है, जिससे उनकी उत्पत्ति, विशेषताओं और व्यवहारों में गहराई से जानने की इच्छा पैदा हुई है। उनकी उत्पत्ति का पता लगाने के प्रयास से पता चलता है कि उनकी उत्पत्ति लगभग 45 मिलियन वर्ष पहले उत्तरी अमेरिका में हुई मानी जाती है। जीनस प्रोटीलोपस के पहले असली ऊँट, इओसीन युग के दौरान दिखाई दिए। समय के साथ, ये शुरुआती ऊँट दुनिया के अन्य हिस्सों में चले गए। आधुनिक ऊँटों के पूर्वजों ने अंततः उत्तरी अमेरिका को एशिया से जोड़ने वाले बेरिंग भूमि पुल को पार किया और पुरानी दुनिया में फैल गए। ऊँट एशिया और मध्य पूर्व में विविध वातावरणों के अनुकूल ढलते हुए आगे विकसित हुए। शुष्क और अर्ध–शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र के वास्तुकार कहे जाने वाले, ऊँट इन वातावरणों के समग्र कामकाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शाकाहारी के रूप में काम करते हुए, ऊँटों में कठोर और काँटेदार पौधों को चरने की अद्वितीय क्षमता होती है, जो उन क्षेत्रों में पौधों की सामग्री को संसाधित करके पोषक तत्व चक्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जहां चारा दुर्लभ हो सकता है। उनकी भूमिका बीज फैलाव तक फैली हुई है, जिसमें बीजों का अंतर्ग्रहण और उसके बाद उत्सर्जन पारिस्थितिकी तंत्र में पौधों की प्रजातियों के वितरण में सहायता करता है। पाचन प्रक्रिया के दौरान उनके पेट में माइक्रोबियल किण्वन रेशेदार पौधों की सामग्री से पोषक तत्व निकालता है, और उत्पादित पोषक तत्वों से भरपूर गोबर शुष्क परिदृश्यों में मिट्टी की उर्वरता और पोषक चक्र को बढ़ाता है। गोबर का भृंग अपने अस्तित्व के लिए ऊँट का बहुत आभारी है! ऊँटों का ब्राउज़िंग व्यवहार वनस्पति प्रबंधन में अतिरिक्त सहायता करता है, पौधों के जीवन की संरचना को प्रभावित करता है और विशिष्ट प्रजातियों के प्रभुत्व को रोकता

है। विश्व में पाए जाने वाले ऊँटों की दो प्रसिद्ध प्रजातियाँ हैं: ड्रोमेडरी ऊँट (कैमल्स ड्रोमेडेरियस), जिसमें एक कूबड़ होता है और यह अरब प्रायद्वीप का मूल निवासी है, और बैक्ट्रियन ऊँट (कैमल्स बैक्ट्रियनस), जिसके दो कूबड़ होते हैं और यह मध्य और पूर्व एशिया का मूलनिवासी है। एक–कूबड़ वाला ड्रोमेडरी दुनिया की ऊँट आबादी का 94% हिस्सा बनाता है, और दो–कूबड़ वाला बैक्ट्रियन ऊँट 6%। जंगली बैक्ट्रियन को अब गंभीर रूप से लुप्तप्राय माना जाता है। भारत में ड्रोमेडरी ऊँट पाये जाते है, जो हमारे देश की एकमात्र ऊँट प्रजाति है। यह प्रजाति शुष्क और अर्ध–शुष्क वातावरण में पनपने के लिए उल्लेखनीय अनुकूलन प्रदर्शित करती है। मुख्य रूप से रेगिस्तानी क्षेत्रों, शुष्क मैदानों और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में रहने वाले, ये ऊँट कठोर परिस्थितियों में लचीलापन प्रदर्शित करते हैं। शारीरिक रूप से, वे उच्च तापमान को सहन करते हैं, केंद्रित मूत्र का उत्पादन करके पानी का संरक्षण करते हैं, और पानी की हानि को कम करने के लिए पसीना कम करते हैं। पानी के बिना लंबे समय तक जीवित रहने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं, ड्रोमेडरी ऊँट जब पानी पीते हैं तो कुशलतापूर्वक बड़ी मात्रा में पानी पी लेते हैं, जो सीमित जल स्रोतों वाले क्षेत्रों में जीवित रहने के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे कि ड्रोमेडरी ऊँट शाकाहारी होते हैं, वे अपने आहार में अनुकूलनशीलता प्रदर्शित करते हैं जिसे कई अन्य जानवर प्राप्त नहीं कर सकते। बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप उनकी खानाबदोश जीवनशैली, उनकी जीवित रहने की क्षमता को और बढ़ाती है। इस कारण ही एक महत्वपूर्ण जंगली आबादी बनी हुई है, ड्रोमेडरी ऊँटों को प्राचीनकाल से पालतू बनाया गया है, जो परिवहन, सामान ले जाने और दूध, मांस और खाल प्रदान करने के लिए मानव की जरूरतों को पूरा करते हैं। ड्रोमेडरी प्रजाति के भीतर, आई सी एआ र–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, भारत आधिकारिक तौर पर नौ पंजीकृत ड्रोमेडरी ऊंट नस्लों को मान्यता देता है: बीकानेरी – राजस्थानय; जैसलमेरी – राजस्थान; जालोरी – राजस्थान; कच्छी – गुजरात; मालवी – मध्य प्रदेश; मारवाड़ी – राजस्थान; मेवाड़ी – राजस्थान; मेवाती – राजस्थान एवं हरियाणा; खरई – गुजरात। नौ में से, बीकानेरी नस्ल एक प्रमुख ऊँट नस्ल के रूप में सामने आती है, जिसका नाम बीकानेर शहर से लिया गया है, जिसे 15वीं शताब्दी में राव बीका द्वारा स्थापित किया गया था। अपनी बेहतर भार क्षमता के लिए प्रसिद्ध, बीकानेरी ऊँट मुख्य रूप से बीकानेर और पड़ोसी जिलों, जिनमें राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, झुंझुनू, सीकर और नागौर के साथ–साथ हरियाणा और पंजाब के आसपास के हिस्सों में पाले जाते हैं। बीकानेरी नस्ल का घरेलू क्षेत्र अत्यधिक गर्म और ठंडी जलवायु के साथ शुष्क और रेतीली परिस्थितियों की विशेषता है। यह ऊँट की वह नस्ल है जिसने दयालबाग़ में अपना घर बना लिया है। बीकानेरी ऊँटों ने अपनी भारी बनावट और आकर्षक काया से अलग पहचान बनाई, जो एक शानदार रूप प्रदर्शित करता है। बीकानेरी नस्ल एक विविध कोट रंग, विशिष्ट चेहरे की विशेषताओं और एक अच्छी तरह से विकसित शरीर का प्रदर्शन करती है, जो अरब प्रायद्वीप में प्राचीन ऊंट पालतू जानवरों की वंशावली का पता लगाती है। सदियों से पारंपरिक प्रजनन और पर्यावरण अनुकूलन के माध्यम से विकसित होने वाली नस्ल अपनी विशेषताओं में निहित इतिहास को दर्शाती है। ऊँटों को पालतू बनाना ऊँटनी के दूध की पोषण संबंधी समृद्धि से प्रभावित था, जो गाय के दूध से भिन्न होता है। उल्लेखनीय विशेषताओं में कम कैसिइन प्रोटीन शामिल है, जो इसे गाय के दूध से एलर्जी वाले लोगों के लिए संभावित रूप से है, उच्च पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड के साथ विशिष्ट वसा संरचना, और विटामिन, खनिज, इम्युनोग्लोबुलिन और प्राकृतिक रोगाणुरोधी गुणों की समृद्ध सामग्री से उपयुक्त बनाता है। बीकानेरी ऊँटनी के दूध की पोषण संबंधी प्रोफाइल आहार और पर्यावरण जैसे कारकों के आधार पर भिन्न होती है, जो रिपोर्ट किए गए स्वास्थ्य लाभों में योगदान करती है।

दयालबाग़ गौशाला में नया आगमन

प्रिया सिंह

बैचः एम बी एम (1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2012), डी.ई.आई.;
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

दयालबाग़ गौशाला में अब एक और योगदान हुआ है,
बकरियों के बाद, ऊँट नया संस्करण हैं,
उन्होंने जयपुर से आगरा तक यात्रा की है,
अद्वितीय साहस के साथ बाधाओं का सामना किया है।

शक्ति और लचीलेपन का प्रतीक,
प्रोविडेंस द्वारा एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए लाया गया,
राजसी और सुंदर वे हैं,

दयालबाग़ गौशाला के उभरते सितारे वे हैं।
कैमल पॉइंट पर, उन्हें सुरक्षात्मक रूप से रखा जाता है,
प्यार, गर्मजोशी और भोजन से पाला जाता है,
आध्यात्मिक गुरु की दयालु दृष्टि से आशीर्वाद दिया जाता है,
जो उनके मनोदशा के उतार–चढ़ाव को शांत करता है।

हर समय रा धा स्व आ मी नाम का जाप,
उपचार मंत्र, सुखदायक शरीर और मन,
एक नई भूमि मेरा आश्रय बन गई शांत, शांत,
वे दिव्य गीत सुनते हैं, और अनुग्रहकारी *दर्शन* के लिए, उनका दिल तरसता है।
ऊँट सभी के प्रति मित्रतापूर्ण हैं,
बच्चे भी खूब मौज–मस्ती करते रहते हैं,
ऊँटों के साथ खड़े होकर खुश होते हैं,
यह बच्चों के लिए यह गर्व की बात है।

ऊँटनी का दूध समृद्ध और कीमती है,
एक संपूर्ण स्वास्थ्य टॉनिक है, बहुत पौष्टिक है,
संत सुपरह्यूमन्स के लिए यह एक वास्तविक वरदान है,
वे बहुत जल्द स्वस्थ और मजबूत हो जाएंगे।

उनके आगमन के लिए सर्वशक्तिमान पिता की आभारी हूँ,
आगरा में ऊँटों की परंपरा पुनर्जीवित हो रही है,
प्रार्थना करें कि ऊँट हमारी भूमि की शोभा बढ़ाते रहें,
दयालबाग़ गौशाला में, हम उन्हें लंबे और भव्य देखते रहें।

एक नई भूमि मेरा आश्रय बन गई

गुरप्यारी भटनागर

पी एच.डी, अंग्रेजी साहित्य; एम.ए. अंग्रेजी (बैच 1996–1998), डी.ई.आई. वर्तमान में, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी साहित्य, शारदा विश्वविद्यालय और फैसिलिटेटर, नोएडा डी.ई.आई. सूचना केंद्र

भगवान से उपहार, मुझे दो आकारों में दिया गया,
इतना भव्य और दुर्लभ
और मैंने सोचा
कि कौन सा उपहार दुर्लभ है?
दोनों में से कौन सा उपहार अधिक कीमती है?
यह मेरी कूबड़ है
जिसने पानी जमा किया और मुझे मजबूत रखा?
या मेरी दुर्लभ पलकें
जिन्होंने गर्म भूमि को पार करते समय मेरी आँखों की रक्षा की?
हर बार, सूरज ने धरती को झुलसा दिया,
हर बार, मेरे चेहरे पर गर्म हवा चली,
मैंने ऊपर विशाल आकाश की ओर देखा,
उसे धन्यवाद देने के लिए,
दो विचारशील इनामों के लिए
हर बार, मैं सबसे कठिन इलाकों से गुजरा,
मैंने अपने दुर्लभ उपहारों के लिए उसे धन्यवाद दिया
जिसने मुझे अंतहीन रेगिस्तान की गर्मी सहने और जीवित रहने में मदद की
लेकिन एक और उपहार मिला है एक और खजाना जुड़ गया है
एक उपहार जो मेरे पास पहले के दो उपहारों की तुलना में दुर्लभ और प्रिय है
जब एक नई भूमि मेरा स्वर्ग बन गई
जब एक नई भूमि मेरा स्वर्ग बन गई
वे दो उपहार जो बहुत भव्य थे
वे दो उपहार जो अपने आप में बहुत दुर्लभ थे
फिर भी इस नई भूमि के दृश्य जितने दुर्लभ नहीं
फिर भी इस नई भूमि के दृश्य जितने दुर्लभ नहीं

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय बोर्ड: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन, प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लौलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. **Alumni (AADEIs & AAFDEI)**

संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफ़ाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय: पहली मंजिल, 63, नेहरु नगर, आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालय: 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस